शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

रहीम के दोहे में नीतिपरकता

डॉ.तीर्थंकरदान रतुदानजी रोहड़िया
सौराष्ट्र ज्ञानपीठ आर्ट्स एंड कॉमर्स कॉलेज
जेतपुर, गुजरात, भारत

शोध संक्षेप

रहीम के दोहे में नीति, श्रृंगार और भक्ति ये तीनों लक्ष्य उनके साहित्य में, नीतिपक्ष में, विचार की प्रधानता रहती है। उसमें भावना और कल्पना का स्थान सुरक्षित रखते हुए भी विचार का प्राबल्यहै। विचार पक्ष जितना प्रौढ़, प्रबल तथा विस्तृत होगा, नीति काव्य का मूल्य उतना ही अधिक होगा। साथ ही उसकी अनुभूति जितनी मार्मिक और कल्पना जितनी अधिक होगी उसका प्रभाव उतना ही अधिक होगा। अधिकांश संतों की रचनाएँ उपदेश कृतियाँ इसलिये बन गई है, क्योंकि उनमें भावना की मांसलता और कल्पना की तरलता नहीं है। दूसरी ओर श्रृंगार कविता में वासना की बू इसलिए आती है क्योंकि वहाँ विचारों के लिये स्थान नहीं है। नीति काव्य इन दोनों के बीच का काव्य है। रहीम का नीति काव्य इसी प्रकार का काव्य है। प्रस्तुत शोध पत्र में रहीम के दोहे में नीतिपरकता का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

कहा जाता है कि नीति काव्य की अविच्छिन्न परंपरा हिन्दी के प्रारम्भिक कल से ही चली आ रही थी। संत कवियों ने तो नीति मुक्तकों की प्रथमतः रचना भी की थी। अतः नीति काव्य प्रणयन की प्रेरणा का श्रेय कबीर , नानक, दादु आदि संत कवियों को मिलना चाहिये। इस तथ्य को हम अस्वीकार नहीं करते कि संत कवियों ने नीति के दोहों की स्वतंत्र सर्जना रहीम से बहुत पहले ही की थी, किन्तु संतों तथा रहीम के नीति काव्य मे मौलिक अंतर भावना का है। संतों का प्रधान स्वर उपदेश और भक्ति है, नीति नहीं है, जबकि रहीम का उदेश्य नीति काव्य सृजन का था। अब्दुर रहीम खानखाना हिन्दू तथा हिंदुस्तान की परम्पराओं के सच्चे निष्ठावान कवि हैं। प्रत्येक हिन्दी भाषी उनका ऋणी है। मुसलमान रहीम का हिन्दी काव्य भारत के कोटी-कोटी हिन्दू का कंठहार है। हिन्दुओं की वाणी पर रहीम के दोहे उसी प्रकार चढ़े हुए हैं, जिस प्रकार सूर के पद तथा तुलसी की चौपा इयां। स्वतंत्र भारत के लिए रहीम एक आदर्श साहित्यकार हैं। उन्हें यथोचित राष्ट्रीय गौरव मिलना चाहिये।

रहीम के दोहे में नीतिपरकता

लोक और शास्त्र दोनों पाठशालाओं से रहीम ने जो कुछ सीखा उसे काव्यात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम से हमारे सम्मुख उपस्थित कर दिया। यही कारण है कि उनके नीति काव्य में स्वानुभूत क्रियात्मक तथ्यों के साथ ही पूर्व विवेचित शास्त्रीय विषयों का निर्वचन भी भलीभाँति तथा प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। इन में भी अधिकता उन्हीं विषयों की है , जिनसे उनका जीवन क्रियात्मक रीति से संबंध था। निश्चित ही महापुरुषों, भाग्यवानों, दानियों, पुरूषार्थियों तथा याचकों से उनका संपर्क अधिक था अन्य विषयों में कम। यही कारण है कि उनके काव्यों में दान, भाग्य, पुरुषार्थ , दुर्भाग्य , निर्धनता , ऐश्वर्य , निराशा तथा कुसमय आदि विषयो की चर्चा उपेक्षाकृत अधिक हुई है।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ये रहीम दर दर ही फिरही, मांगी मधूकरी आहि। यारो यारी छोड़िए, वे रहीम अब नाही॥"

भाव विह्वल व्यक्ति के मुख से एकांत के क्षणों में कैसी-कैसी मर्म उक्तियाँ कैसे-कैसे उदगार यों ही फूट पड़ते हैं। ऐसे एकाकीपन में कभी वह अपने से और कभी अनुपस्थित व्यक्ति से अनायास ही बोल पड़ता है। उसके हृदय कपाट पूरी तरह खुल जाते हैं। प्रस्तुत छंद एकांतित कवि की ऐसी ही किसी एकांत घड़ी का आत्मालाप लगता है। यह रहीम दर दर फिर रहा है। मित्रो! अब इस रहीम से अपनी मित्रता निर्वाह कर नही सकता। जिस रहीम के यहा रिद्धि-सिद्धियाँ निवास करती थीं। जिस रहीम की दानशीलता उसके सिंहद्वार पर आदि होकर नीचे नयन किये दानोत्सव मानती थी, जिस रहीम के नाम का डंका बजा करता था और तूती बोलती थी, वह रहीम अब नाही रहा। वह अतीत हो गया।

रहिमन निज मनकी विद्या, मन ही राखो गोप। सुनी अठिले हे लोग सब, बाती न लैहे कोप ॥

रहीम भावुकता छोड़ो व्यावहारिक रहो। भाव प्रवाह में मत बहो। हर कोई अंतरंग नहीं होता। हर किसी को अपनी चोट मत दिखाओ। मन की व्यथा को मन में ही रखो उसे बाहर मत ले जाओ। तथाकथित तुम्हारे अपने तुम्हारी व्यथा को ध्यान से सुनेंगे और पीठ पीछे उपहास करेंगे। हंसी उड़ाने में उनको रस मिलेगा। तुम्हारी पीड़ा को बांटने वाला कोई नही। उसे सार्वजनिक मत करो। भीतर ही भीतर रहो। दूर करने का रास्ता स्वयं खोलो। वैसे तो समय के साथ-साथ बड़े से बड़ा घाव भर जाता है। समय पाकर व्यथा भी अपने आप गलती चली जाती है। कभी-कभी वह गलकर ऐसी ऊर्जा बन जाती है कि व्यक्ति अप्रत्याशित करिश्मा कर गुजरता है। अवसाद - विषाद कोई सुनना नही चाहता । सुनेगा भी तो तुम्हारे मुखसे नही किसी दूसरे के मुख से। व्यथा को सहना सीखो। ठीक से रहेना सीखो।

रहिमन अब वे बिरछ कई, जिनकी छनह गंभीर। बागान बीच बीच देखियात, सेहुद कंज करीर॥

रहीम अब वे महामहिम वृक्ष कहाँ, जिनकी उदार, शांत, मंगल , निर्वाणदा यिनी, छाया हुआ करती थी, अब तो इन बाग -बगीचों में जहां देखो वही बस उद्दंड, क्षुद्र , ओछे से हुई कंजे करील के कंटकाकीर्ण झाड झंखाड़ ही देखे जाते हैं। कहाँ गए जीवन-जगत् की धारा मोड देने वाले शलाका पुरुष, जिनकी छाया में शांत क्लांत हताश परास्त जीवन को शांति और विश्रांति मिला करती थी। आशीर्वाद की तरह छायांकित हो जानेवाले वे मनस्वी पुरुष अब कहाँ रहे और उनके औदार्य एवं सदाशयता के छाया वृत्त अब कहाँ।

जीवन के सहज , सरल प्रवाह को सीमित करने वाले जीवन की सामान्य गतिशीलता को अवरुद्ध करनेवाले इन दुरललीतत , दुर्विनीत , दुरुक आशिस्त ओनों बोनों को देखकर मन दु:खी होता है।

रहिमन वे नर मर चुके, जे काहू मांगन जाही। उनसे पहिले वे मुयाए , जिन मुख निकालत नाही॥

वे संभ्रांत, स्वाभिमानी लोग मर ही चुके, जिनको विवश होकर कहीं मांगने जाना पड़ा। ऐसे व्यक्तियों को उनकी अंतरात्मा धिक्कारती है और याचना के समय उनकी आत्मा मर ही जाती है। उदिन दिन हो जाए इससे बड़ी मृत्यु और क्या होगी ? लेकिन मांगने जाने वालों से पहले वे हृदयहीन , करुणा विहीन , संवेदनशून्य लोग मरते हैं। जो समर्थ होकर भी उन सत्पुरुषों को कुछ देने से आप मना कर देते हैं।

रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सुन।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पानी गए न ऊबरै, मोती मानुस चुन॥

रहीम अपना पानी (प्रतिष्ठा) रखिए। किसी भी तरह वह जाने न पाये। पानी ही मानव का जीवन है। पानी (आभा) गया तो मोती गया। पानी (स्वाभिमान) गया तो मानुष गया। पानी गया तो चूना गया। हर हालत में हर सूरत में पानी होना चाहिए। बिना पानी सब सुना है।

अधम बचन काको फल्यो, बेठी ताड़ की छाह।
रहिमन काम न आइहे , ये नीरस जगमही॥

अधम की संगत अवांछनीय है। अधम की बातों में आकर भला कौन यशस्वी जीवन व्यतीत कर सकता है? दुर्बल का आश्रय लेना ताड़ की व्यर्थ छाया में बैठना है। नीच भले ही गलत माध्यमों से बहुत कुछ हासिल कर शक्तिमान हो गया हो, भले ही उसने समाज पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया हो, तो भी उनकी शरण , ग्रहण करना अपने जीवन को अधोगति प्रदान करना है। दुष्ट सर्वथा दूसरों का अशुभ-अमंगल ही सोचता और करता है। उसके कर्म और वचन सज्जनों के लिए हितकर नही होते।

ग्रीष्मतप से संतप्त राही को दूर से आमंत्रित करता हुआ -सा ऊंचा ताड छाया तक नहीं दे सकता। उसकी छाया छलवा मात्र होती है।

काही रहीम धन बड़ी घटे, जात धनिन की बात।
घटै बढै उनको कहा, घास बेची जे खात॥

अमीर की दुनिया में ही धन दौलत का बढना-घटना, घटना-बढना होता रहता है। अगर धन-दौलत बढ़ाने के बाद अचानक घटती है तो उसका धनी लोगों पर गंभीर प्रभाव पड़ता है, उस प्रभाव को प्रहार ही मानिए। धनी लोगों की साख चली जाती है, उनकी बात नही रह पाती। जो भी हो समृद्धि की यह लीला अमीर की दुनिया तक ही सीमित है। इस खेल का गरीब की दुनिया से कोई सरोकार नही। गरीब की दुनिया के लोगों की जिंदगी सपाट होती है। उसमें कोई उतार-चढ़ाव नजर नाही आता। सुबह हुई घास छीले, घास बेची, जो मिला , खाया-पिया और रात हुई तो गाते-बजाते, हस्ते-बोलते सो गए। न पीछे वाले कल का पछतावा न आनेवाले कल की चिंता। जिंदगी जिस राह चलती है , गरीब उस राह चलता है।

खीरा को मुंह काढ़ी कै, मलियत लोन लगाया।
रहिमन करूए मुखन को, चाहियात इहे सजाय॥

खीरा का मुंह काटकर उस पर नमक मल दिया जाता है तभी उसकी कड़वाहट जाती है। कडवे बोल बोलने वालों को भी ऐसी ही कोई सजा मिलनी चाहिए।

छिमा बडेन को चाहिए, छोटेन को उतपात।
का रहीम हरी को घटयो, जो भृगु मारी लात॥

बड़े लोगों को क्षमाशील होना ही चाहिए। छोटे तो अज्ञानतावश उत्पात करते ही हैं। उनके उत्पात से बड़ों, को बहुत कष्ट उठाना होते हैं। बड़ों को चाहिए कि वे छोटों को क्षमा कर दें। क्षमाशीलता की परीक्षार्थ महर्षि भृगु ने भगवान विष्णु के वृक्षस्थल पर पद प्रहार किया तो विष्णु बिलकुल नहीं विचलती हुए, उल्टे उन्होंने महर्षि के चरण चिह्न को प्रसन्न होकर सदा-सदा के लिए अपने वक्ष देश पर अंकित कर उसे 'भृगु वल्लरी' बना दिया। क्षमादान श्रेष्ठ जीवन मूल्यों की श्रेणी मे आत है।

ज्यों नाचत कठपुतरि, करमा नचावत गात।
अपने हाथ रहीम ज्यों, नहीं आयुने हाथ॥

जिस प्रकार सूत्रधार के इशारे पर कठपुतली नाचती है। हाथ पैर ऐसे निष्क्रिय हो जाते हैं, मानो ये अपने नहीं किसी और के हों। सम्पूर्ण देह पर किसी प्रबल सता का अधिकार हो गया होता है। दुर्दिन से उबरने के सफल प्रयास विफल हो जाते हैं। भाग्य-नियति को न माननेवाला बड़े

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

से बड़ा कर्मवीर भी अपमान , वैभवहीनता एवम पराजय के दौर से गुजरते हुए अकस्मात मन के किसी कोने में जीवन को नियति का खेल मानने लगता है। फिर भी प्रतिकूलताओं के विरुद्ध उसका संघर्ष स्थगित नहीं होता।

रहिमन देखि बडेन को , लघु न दीजिए डारी।
जहा काम आवै सुई , कहा करे तखारी॥

समाज के उन्नयन मे बड़ों का बड़ा योगदान तो होता है। छोटों का भी अपना महत्व होता है। छोटे-छोटे आदमी भी समाज के ही अंग-प्रत्यंग हैं। उनके प्रति उपेक्षा भाव रखना समाज को निर्बल बनाता है। बडों के प्रभाव में आकर अपने सहयोगी छोटों को मत उपेक्षित करो। उनको छोडकर बड़ों को देखते ही उनकी और ढल जाना तुम्हारी व्यक्तित्वहीनता होगी। तुम्हारे छोटे लोग तुमसे दूर हो जायेंगे। उनके आत्म सम्मान को धक्के मत दो। माना सुई बहोत छोटी है , किन्तु जहां सुई काम आती है , वहां महिमावती तलवार क्या कर सकती है। व्यक्ति बड़ा हो या छोटा , उसके हृदय को ठेस नहीं लगनी चाहिए। आत्म गौरव किसमें नहीं होता ?

अरज गरज मानै नहीं, रहिमन ये जन चारी।
रीतिया राजा मांगता, काम आतुरी नारी॥

वह बेगैरत इन्सान जिसकी कर्ज लेने की आदत हो गयी हो, वह अदूरदर्शी राजा जो अनागत कल की चिंता किये बिना अपनी आशा मनवाने में अधीर हो, गया-बीता भिखारी और भ्रान्त शिथिल चरित्र की कामातुर स्त्री ये चारों अपनी इच्छापूर्ति में ऐसे उतावले और बेसुध हो जाते हैं कि उनको किसीकी बात सुनायी ही नहीं देती। समझ-बुझ खो देते हैं ये लोग। ये किसी की नहीं मानते बस अपनी ही रो में बहे चले जाते हैं। ऋणोपजीवी अपने आत्म गौरव को बेच चुका होता है। बार - बार कदर्थित होकर भी वह फिर वही लेने पहुँच जाते हैं। विचार मूढ़ राजा अपने अहम की तुष्टि के लिए उसकी आज्ञा का अविलंब पालन हो, बस यही चाहता है , चाहे इस निर्णय में उसका सर्वनाश क्यों न हों जाये। मरी आत्मा वाला भिक्षुक अपमान को अपमान मानता ही नहीं। दुतकार-फटकार के बाद कुछ पा जाना उनकी विजय है। अनियंत्रित काम क्षुधा वाली स्त्री अपने कुल और शील दोनों को एक ही झटके में उखाड़ फेंकती है।

कौन बड़ाई जलधि मिली, गंग नाम भो धीम।
काकी महिमा नहीं घटी, पर घर गए रहीम॥

बिना बुलाये दूसरे के यहाँ जाने से किसकी प्रतिष्ठा नहीं घट जाती ? त्रिभुवनतारिणी , महिमाबली, यशस्वीनी, पुण्यतोया गंगा भावावेश में आकर दौड़ती हुई सागर से जा मिली। ऐसे मुक्त हृदय से मिली की समुद्र से समाहित ही हो गयी कि उसका अस्तित्व-नाम ही मिट गया। अपनी अस्मिता , अपनी पहचान मत खोओ। दूसरी और भी मिलन आतुरता होनी चाहिए। यों ही दूसरे के हृदय को समझे बिना प्रवाहित हों जाना, उमड़ पड़ना योग्य नहीं माना जाता।

ख़रच बढ़्यो उधम घटयो, नृपति निठुर मनकीन।
कहु रहीम कैसे जिए, धोरे जल की मीन ॥

दूदिन आया , पद गया , अधिकार गयो , अब प्रतिष्ठा बनाये रखना और इतने बड़े परिवार को चलाना मुश्किल हो गया। खर्च बढ़ गया। जीविका के सम्मानजनक स्रोत-साधन घट गये। आमदनी बंद हो गयी। स्वार्थी-इर्ष्यालुओं ने मिलकर नृपति को ऐसा भरा कि उसने निष्ठुरता धारण कर ली। इतने सारे तनाव और इतनी सारी विवशताएँ।

रहिमन कबई बडेन के, नाही गर्व को लेस।
भार धरे संसार के, तऊ कहावत सेस॥

बड़े लोग अतिशय विनयशील होते हैं। बड़े लोगो में कभी गर्व का लेश भी नही होता। वे विनम्र ,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

निराभिमानी और निरंहकारी होते हैं, ये अपने कर्तव्य के प्रति पूर्ण समर्पित होते हैं। वे अपने कर्तव्य के मूल्य को जानते हैं व मान-अपमान, आदर-अनादर से उठे हुए लोग होते हैं। उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य होता है। सर्व कल्याण अपने कमंडल पर भूमंडल के भार को धारण करनेवाले परम दैव शेष की अशेष महिमा है, पर वे 'शेष' ही कहे जाते हैं। मानो वे नगण्य हैं। कुछ भी कह डालो , इस कल्याण देवता की कर्तव्यनिष्ठा पर कोई अंतर नहीं पड़ता। खंडित नहीं हो सकती।

आवत काज रहीम कही , गादे बंधु सनेह।
जीरन होत न पेड़ ज्यो, थामे बरै बरेह॥

गाढे ,में आखिरकार अपने सगे-संबंधी ही काम आते हैं। मुसीबत में अपने बंधु-बांधव ही साथ देते हैं। ऐसे में उनका अपनत्व अपने आप ही फूट पड़ता है और वे संकट से मुक्ति दिलाने मे जुट-जाते हैं। इस विपन्नावस्था में दूसरे लोग दूर ही खड़े रहते हैं। वटवृक्ष के सजातीय बंधु बरोह वट को थाम लेते हैं। और उसे जीर्ण-जीर्ण होने से बचा लेते हैं। वह और भी तेजस्वी और महिमावान बन जाता है, अपने सजातियों के बीच खड़ा भीष्म पितामह कितना गौरवान्वित लगता है।

खैर खून खांसी, खुसी बैर प्रीति मदपान।
रहिमन ढाबे न धबै, जानत सकल जहान॥

कुशल क्षेम , हत्या , खांसी , खुशी , बेर-प्रेम और मधपान ये कभी दबाये नहीं दबते और छिपाये भी नहीं जाते हैं। जिसे सारी दुनिया पहचान ही जाती है।

गरज अपनी आप सो, रहिमन कही न जाय।
जैसे कुल की कुलवधू, पर घर जात लजाय॥

स्वाभिमान से किसी अपने के पास भी जाकर अपनी गरज कहते नहीं बनती। जिससे ऐसा व्यक्ति दुविधा में पड़ जाता है। जैसे कुलवधू पड़ोसी के यहाँ कोई निवेदन हेतु जाते हुए लज्जा का अनुभव करती है। किन्तु विवशता के कारण जाना ही पड़ता है। कहा गया है कि , ऐसे अपने लोग जो अपनों की गरज को बिना कहे ही सुन लेते हैं। स्वतः स्फुट अनुग्रह का रस ही कुछ और है। ऐसे अयाचित अनुग्रह से अनुग्रह करनेवाला तथा अनुग्रहित व्यक्ति दोनों उच्चतर भाव से भर जाते है।

जो रहीम उतम प्रकृति,का करी सकत कुसंग ।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥

सत्पुरुषों पर कुसंगति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। जिसका स्वभाव उतम है , उसका कुसंगति क्या कर सकती है ? प्रसिद्ध है कि चन्दन के वृक्षों पर विषधर सर्प लिपटे रहते हैं किन्तु विष का प्रभाव उन पर नहीं पड़ता। सत्पुरुषों की इच्छाशक्ति इतनी सबल होती है कि कुसंग के विकार उनको विकृत नहीं कर पाते। वे किसी विकृत से प्रभावित नहीं होते। किन्तु दुर्गुणों को निस्तेज करने की क्षमता सर्वसाधारण में नहीं होती। वही कुसंगति धीरे-धीरे अपना स्थान बना लेती है।

बड़े बड़ाई ना करै, बड़े न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख हमारा मोल॥

बड़े लोग अपनी बड़ाई नहीं करते, बड़े लोग, बड़ी-बड़ी बातें नहीं करते। वे विनम्र धीर-गंभीर होते हैं। स्वयमप्रभा हीरा कब कहता है कि मैं हीरा हूँ। मेरा मोल लाखों में है। आत्म श्लाघा किसी दुरात्मा की दी हुई भभूत है। इसे वही धारण करता है, जो भीतर से खाली होता है। हम क्यों मुखरित हों ? क्यों कर्ता बोले ? कर्म क्यों न बोले ?

रहिमन आटा के लगे, बाजत हे दिन रात।
घिउ सककर जे खाते हे, तिनकी कहा बिसात॥

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अगस्त 2016
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

परोपजीवी व्यक्ति उपजीव्य का चारण बनकर रह जाता है। किसी के एहसान -उपकारों से दबा व्यक्ति कभी उसके विरुद्ध खड़ा नहीं हो सकता। वह मेरुदंड से रहित होता है। उसका कोई स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं होता। वह अंध भक्त हो जाता है और सही-गलत सब का समर्थन करता है, जो दूसरों की अनुकंपा पर होते हैं, वे अपने स्वामी के विरुद्ध जाने का दुस्साहस कर ही नहीं सकते। मृदंग जैसे वाघयंत्र में मात्र आटे का लेप होता है। इतने पर ही वह प्रसन्न होकर दिन-रात अपने स्वामी की इच्छानुकूल स्वर दिया करता है। गलत को चुनौती और सही को समर्थन वही दे पाता है जो पूरी तरह अपनी जमीन पर खड़ा हों, जो पूरी तरह अपने बूते पर बना हुआ हों।

रहिमन धागा प्रेम को, मत तोरो चटकाय।
टूटे से फिर ना मिले, मिले गांठ परिजाय॥

यह प्रेम का धागा है। बहुत ही नाजुक है। इसे ऐसे मत झटको की टूट जाये। टूट गया तो फिर नहीं मिल पाता। मिल भी गया तो उसमें गांठ पड़ जाती है। वह गांठ मनोमालिन्य की है। प्रेम में कपट की ग्रंथि नहीं होती। कहीं ग्रंथि आ गयी तो प्रेम में पहले जैसी बात नहीं रहेगी। प्रेम के प्रति अतिरिक्त ध्यान रखना होगा। वह सुकोमल और सवेदनशील जो ठहरा।

रहिमन निचन संग बसी, लगत कलेक न काही।
दूध कलारी कर गहे, मद समुझै सब ताही॥

नीच लोगों के साथ रहने से किसको कलंक नहीं लगता ? मदिरा बनाने बेचनेवाली कलवारिन चाहे कलसे में दूध क्यों न लिये जा रहे हो तो भी लोग धारणा बना लेने के कारण उसे मदिरा ही समझेंगे। लोकधारणा रसीले - सजीले हथों में मधु कलश ही देखती आ रही है।

वे रहीम नर धन्य हे, पर उपकारी अंग।
बाटनवार को लगे, ज्यों मेहंदी को रंग॥

धन्य हैं वे लोग, जिनके अंग-अंग में परोपकार के भाव उमड़ते रहते हैं। परोपकार ही उनका धर्म है। इस कार्य के लिए उनको जो पुरस्कार मिलता है, वह है इस कार्य से प्राप्त होनेवाला आनंद। यही प्रत्युपकार है। औरों के लिए महेंदी पीसने वाले की अपनी हथेलियाँ अपने आप ही रच जाती हैं।

रहिमन जीहवा बावरी, कही गै सरग पताल।
आयु तो कही भीतर रही, जूती खात कपाल॥

वाणी पर संयम हो नाप तोलकर बोला जाये शब्दकमल भी। शब्द बाण भी। बावली जिह्वा बिना सोचे समझे न जाने क्या-क्या और न जाने कहाँ-कहाँ की कह गयी। कहकर खुद तो भीतर जा रही। शब्द की प्रतिक्रिया भयंकर हुई। जूते खाने पड़े बेकसूर को। शब्दभेदी बाण समझकर चलाओ।

निष्कर्ष

प्रस्तुत वर्णन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि रहीम का प्राप्त नीति काव्य विषय-निरूपण की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। उन्होंने दान, मन, सुसंग, कुसंग, सज्जन, दुर्जन आदि कतिपय पूर्व विवेचित-विषय परंपरा को आगे बढ़ते हुए उसे घोर धार्मिकता एवम शास्त्रीयता के वातावरण से मुक्त करके क्रियात्मक जीवन के आधार पर व्यकत किया है। उन्होंने अपने गंभीर शास्त्र ज्ञान तथा विस्तृत लोकानुभव के आधार पर विशुद्ध व्यावहारिक विषय विवेचन परिपाटी की स्थापना की तथा नीति काव्य के धवल प्रासाद को दैनिक जीवन की नीव पर खड़ा किया। इसीलिए उनका नीति काव्य केवल किसी वर्ग विशेष तक सीमित न रहकर आज भी प्रत्येक श्रेणी के लोगों की जिह्वा पर अंकित है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1 www.abdulrahimkhan-i-khana.com
2 Rahim Dohavali, Sampadak : Vagdev

3 www.weekipedia.rg

4 Rahim Pni Rakhiye, Sampadak : Harikrishn Devsare

5 Rahim Dhaga Rrem ka, Sampadak : Malti Joshi

6Rahim, Sampadak : Bhalchandra Joshi

7 Rahim Granthavali, Sampadak : Vidhyanivas Mishra

8 Telefonic Mulakat, Prof.J.Z.Kyada

9 Rahim Granthavli, Sampadak : Vijaypal Sinha

10 Bharat kaa Bhasha Sarvekshan, Sir Jeorge Ibrahim Griyarsan